ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर।। सामवेद 1325
हे शक्तिदायक प्रभो! हमें शु शक्ति प्रदान करो।
O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 37, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 अक्तूबर, 2014 से रविवार 12 अक्तूबर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज सिंगापुर एवं आर्यसमाज बैंकॉक के अन्तर्गत

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां पूर्ण

लम्बी अवधि के बाद विद्वान, संन्यासी, आर्य नेता और कार्यकर्ताओं का संगम होगा सिंगापुर एवं थाईलैंड में

मॉरीशस, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, लन्दन, बर्मा, कनाड़ा, हॉलैण्ड एवं भारत के लगभग 500 प्रतिनिधियों के पहुंचने की सूचनाएं

पहली बार सिंगापुर में खुले मैदान में होगा – विशाल यज्ञ एवं महासम्मेलन

अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में रवाना होंगे भारतीय प्रतिनिधि दल के सदस्य

जो लोग सीधे पहुंच रहे है कृपया अपने पहुंचने की सूचना arysabha@yahoo.com पर अवश्य भेजें – प्रकाश आर्य, मन्त्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादकीय

प्रधानमन्त्री का 'स्वच्छ-भारत' अभियान

आओ ! अपने आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं को भी रखें पूर्ण स्वच्छ

माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को 'स्वच्छ-भारत' अभियान का प्रारम्भ किया यह कार्य श्रेष्ठ एवं महान है। क्योंकि स्वच्छता से ही समृद्धि बढती है। स्वच्छ रहना मनुष्य का सर्व प्रथम कार्य है। इसके लिए आदरणीय मोदी जी विशेष बधाई के पात्र है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने समस्त समाजों की ओर से प्रधानमन्त्री जी के इस महान कार्य के लिए कोटिशः धन्यवाद प्रदान करती है। इस स्वच्छता के महाअभियान में राष्ट्र के प्रत्येक कोने-कोने में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में सफाई करने के लिए प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारीगण संलग्न रहे। जिसमें देश की सभी आर्य समाजों एवं उनसे सम्बन्धित अन्य शैक्षणिक संस्थाएँ सफाई करते हुए भारत को स्वच्छ, एवं समृद्ध बनाने के लिए कृत संकल्प है। लेकिन यह एक प्रकार की (बाह्य) स्वच्छता है। जबकि भारतवर्ष आन्तरिक स्वच्छता का भी पक्ष धर है। स्वच्छता के विषय में आर्दश (वैदिक) दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए भगवान मनु कहते है।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्याम् भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।
(मनु०)

अर्थात्-जल से केवल बाहर (शरीर, वस्त्रादि) की शुद्धि होती है, सत्य आचरण से मन की शुद्धि होती है। विद्या और तप अर्थात् धर्म के अनुष्ठान से आत्मा की शुद्धि होती है। और ज्ञान अर्थात् पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के विवेक से बुद्धि दृढ़ निश्चय पवित्र होती है। योग दर्शन में महर्षि पतञ्जलि अष्टांग योग की चर्चा करते हुए 'नियम' के प्रथम लक्षण को 'शौच' अर्थात् शुद्धि के रुप में बतलाते है। जिसमें बाह्य स्नान, वस्त्रादि तथा आन्तरिक (व्यवहारादि की) शुद्धि, आचरण की पवित्रता को माना गया है।

अतः प्रथम बाह्य तथा आन्तरिक शोधन से मनुष्य भी शुद्ध एवं पवित्र बन जाता है। उसी प्रकार प्रधानमन्त्री जी का यह अभियान बाह्य आचरण को शुद्ध एवं पवित्र बनाना, जिससे आन्तरिक शुद्धि का भी कार्य पूर्ण किया जा सके। इस अभियान में आर्य समाज की उत्कृष्ट भूमिका रही क्योंकि आर्य समाज के अन्तर्गत वैदिक मान्यताओं का व्यवहार में लाया जाता है।

इस अभियान में सडकों, पार्कों, चौराहों, पानी के स्थलों, शौचालयों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया जो अत्यधिक आवश्यक भी है, और सार्वजनिक भी। साान्यतया कुछ आर्यसमाजों में इस तरह की न्यूनतएं पाई जाती हैं इसलिए स्वच्छता की व्यापकता को बनाए रखने के लिए आर्य समाजों को कुछ निम्न प्रकार सुझाव प्रदान किए जाते हैं। – शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

तीन गुणा आयु

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। यजुर्वेद : ३/६२

अर्थ—हे परमेश्वर! [आपकी कृपा से] **(यत्)** जो **(देवेषु)** विद्वानों में **(त्र्यायुषम्)** तीन गुणा आयु देखी जाती है **(जमदग्नेः)** चक्षु आदि इन्द्रियाँ एवं यज्ञ, परोपकार करने वालों की **(त्र्यायुषम्)** तीन गुणा आयु **(कश्यपस्य)** प्राण तथा दूरदर्शी को तीन गुणा आयु प्राप्त होती है **(तत्)** वह **(नः)** हमारी **(आयुः)** आयु **(त्र्यायुषम्)** तीन गुणा होवे।

'चरक संहिता' में आयु का लक्षण बतलाते हुये कहा है—

शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते॥ च०सू० १.४२॥

शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं। आत्मा के रहने से ही यह शरीर सड़ने नहीं पाता और प्राणापान क्रिया होती रहती है। सामान्य रूप में मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष मानी गई है परन्तु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा करती है। आयु का कम या अधिक होना दैव और पुरुषार्थ दोनों पर आधारित है। पूर्वजन्म में किया गया कर्म दैव और जो इस जन्म में किया जाता है वह पुरुषार्थ माना जाता है। जब कभी दैव बलवान् और पुरुषार्थ निर्बल हो तो दैव अर्थात् पूर्वजन्म के कर्मानुसार आयु का परिमाण होता है। जब पुरुषार्थ प्रबल और दैव दुर्बल हो तब दैव दब जाता है। यदि दैव और पुरुषार्थ दोनों ही बलवान् हों तो दीर्घायु की प्राप्ति होती है। दोनों के निर्बल होने पर अल्पायु और मध्यम संयोग होने पर सुख और दुःख रूप आयु होती है। जब दैव बलवान् होता है तब पुरुषकार अर्थात् आहार-विहार तथा दिनचर्या समुचित होने पर भी दैव उसे नष्ट कर देता है तब आयु का मान नियत माना जाता है। परन्तु अत्यन्त पुरुषार्थ से दैव को दबाकर आयु बढ़ाई भी जा सकती है। यदि सभी की आयु निश्चित अवधि वाली है तो फिर सर्प, व्याघ्र, अग्नि, हिंसक लोगों और शस्त्रों के आघात से भी मृत्यु नहीं होनी चाहिये। रोगी को वैद्यों की औषधि भी स्वस्थ नहीं कर सकती थी। रसायन का सेवन, संयम, सदाचार आदि आयु बढ़ाने वाले उपाय निरर्थक सिद्ध होते। इससे सिद्ध होता है कि आयु का परिमाण दैव और पुरुषार्थ दोनों पर निर्भर करता है।

मन्त्र में 'जमदग्नि' चक्षु आदि सभी इन्द्रियों और 'कश्यप' प्राण अर्थात् मन, बुद्धि आदि का वाचक है। जमदग्नि जठराग्नि और कर्मकाण्डी व्यक्ति को भी कहते हैं।

'चरक संहिता' में रोगी कौन नहीं होता इसे बतलाते हुए कहा है—

मतिर्वचः कर्मसुखानुबन्धं सत्त्वं विधेयं विशदा च बुद्धिः।

ज्ञानं तपस्तत्परता च योगे यस्यास्ति तं नानुतपन्ति रोगाः॥ (च०शा० २.४८)

जिसकी सुख देने वाली मति, सुखकारक वचन, और सुखकारक कर्म, अपने अधीन मन, पाप-रहित बुद्धि है, जो ज्ञान प्राप्त करने, तपस्या और योग सिद्ध करने में तत्पर रहते हैं, उन्हें शारीरिक और मानसिक कोई भी रोग नहीं होते।

युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा—

आयुष्मान् केन भवति अल्पायुर्वापि मानवः। तपसा ब्रह्मचर्येण जपहोमै स्तथौषधैः।

कर्मणा मनसा वाचा तन्मे ब्रूहि पितामह॥ महाभारत अनु० अ० १०४॥

भीष्म पितामह कहने लगे—

आचाराल्लभते ह्यायुराचाल्लभते श्रियम्। आचारात् कीर्तिमाप्नोति पुरुषः प्रेत्य चेह च॥

तस्मात् कुर्यादिहाचारं यदीच्छेद् भूतिमात्मनः। अपि पापशरीरस्य आचारो हन्त्यलक्षणम्॥

सदाचार का पालन करने से पुरुष इस लोक और परलोक दोनों में आयु, श्री और कीर्ति प्राप्त करता है। जिनका शरीर पूर्वजन्म के पापों से रोगी है या जो पापी हैं वे भी यदि सदाचार का पालन करें तो उनके शरीर तथा मन शुद्ध हो जाते हैं।

तपसा ब्रह्मचर्येण रसायन निषेवणात्। उदग्रसत्त्वा बलिनो भवन्ति चिरजीविनः॥ महा० अनु० अ० १४५॥

तप, ब्रह्मचर्य तथा आयुर्वेदोक्त रसायनादि सेवन से मनुष्य अधिक धैर्यशील, बलवान् और चिरंजीवी हो जाता है।

अक्रोधनः सत्यवादी भूतानाम विहिंसकः। श्रद्धानोऽनसूयुश्च शतं वर्षाणि जीवति॥

जो क्रोध नहीं करता, सत्य बोलता है, प्राणियों की हिंसा नहीं करता, निन्दक नहीं है और कुटिलता से दूर है वह सौ वर्ष तक जीता है।

अल्पायु कौन होते हैं?

ये नास्तिका निष्क्रियाश्च गुरु शास्त्राभिलंघिनः। अधर्मज्ञा दुराचारास्ते भवन्ति गतायुषः॥

जो नास्तिक, क्रियाहीन (आलसी) गुरु और शास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन करने वाले, धर्म को न जानने वाले और दुराचारी हैं उनकी आयु क्षीण हो जाती है।

विशीला भिन्नमर्यादा नित्यं संकीर्णमैथुनाः। अल्पायुषो भवन्तीह नरा निरयगामिनः॥

जो शील से रहित, धर्म की मर्यादा को तोड़ने वाले, व्यभिचारी हैं, वे अल्पायु होते हैं और नरक में जाते हैं। (महा०अनु० अ० १४५.११-१२)

देवों की आयु

देव विद्वानों को कहते हैं। विद्या, सदाचार, ब्रह्मचर्यादि के पालन से उन्हें दीर्घायु की प्राप्ति होती है। तद्यथा

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। (अथर्व० ११.५.१९)

=ब्रह्मचर्य के तप से देवों ने मृत्यु को दूर भगा दिया।

ब्रह्म का चिन्तन, वेदाध्ययन और वीर्यरक्षण, ये तीन अर्थ ब्रह्मचर्य के हैं।

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्त एष इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु॥

(अथर्व० १२.२.२१)

देवयान के पथिक से मृत्यु दूर रहती है।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ साम० १८७४॥

हे विद्वानो! आपके उपदेश से हम कानों से भद्र सुनें, आँखों से भद्र देखें, स्थिर और सुदृढ़ अंगों वाले हम परमात्मा की स्तुति करें और देवों से प्राप्त होने योग्य आयु को प्राप्त होवें। इसका अभिप्राय यही है कि देवों के समान आचरण से दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

प्राणं देवा उपासते। (अथर्व० ११.४.११)

देव जन प्राण की उपासना करते हैं अर्थात् प्राणायाम का अभ्यास, सात्विक आहार, संयम, सदाचार और प्राणों के भी प्राण परमेश्वर की उपासना करते हैं।

यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः। यजुः० ३४.५१॥

जो बलवर्धक और ओज तेज के देने वाले वीर्य का संरक्षण करता है वह विद्वज्जनों में दीर्घ आयु को प्राप्त होता है।

मन्त्र में चार बार ''त्र्यायुषम्'' आया है इसका अभिप्राय यही है कि हम इन्द्रियों को संयमित कर, प्राणायाम से प्राणों को संयमित करें और देव अर्थात् विद्वान् जैसे अपनी आयु को बढ़ाकर उसे विद्या, धर्म, परोपकार में लगा देते हैं वैसे ही हम भी तीन या चार सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें।

- *क्रमशः*

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलोड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें

Sr. No.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS	Uninor	Tata Indico	Reliance
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509	0387407	1242047	6312073
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510	0387408	1242048	6312074
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511	0387409	1242049	6312075
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343		0387410	1242050	6312076
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512	0387411	1242051	6312077
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513	0387412	1242052	6312078
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514	0387413	1242053	6312079
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)	10444139	720111	543211007389	376644 543211462723	254936	173347	77772515	0387414 1721306	1242054	6312080

यदि आप इन गीतों में से किसी एक धुन को अपनी मोबाइल ट्यून बनाना चाहते हैं अपने मोबाइल से निम्न प्रकार लिखकर मैसेज करें

Voda- type "CT code"send sms to 56789
Airtel- Dial Code and Say " YES"
Tata docomo- type "CT code" send sms to 543211
MTS- type "CT code" send sms to 55777
TATA Indicom - type "WT code" send sms to 12800
Idea- type "DT Code"send sms to 55456
Tata cdma- type "Wt code" send sms to 12800
BSNL- type "BT code" send sms to 56700
UNINOR - type "CT code" send sms to 51234
Reliance - type "CT code" send sms to 51234

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप अपने आइडिया फोन से टाइप करें "DT 720080" और 55456 पर SMS कर दें।

दशहरा : 3 अक्तूबर, 2014 पर विशेष

महर्षि दयानन्द और मांसभक्षण निषेध

(1) ब्रह्मचारियों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेध:-

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य मांस गन्ध माला रस, स्त्री और पुरुष का संग, सब खटाई, प्राणियों की हिंसा, अंङ्गो का मर्दन, बिना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आंखों में अञ्जन, जूते और छत्र का धारण, काम क्रोध लोभ मोह, भय शोक ईर्ष्या द्वेष नाच गान और बाजा बजाना, द्यूत, जिस किसी की कथा, निन्दा, मिथ्या-भाषण, स्त्रियों का दर्शन, आश्रय, दूसरे की हानि आदि कुकर्मो को सदा छोड़ देवें। स०प्र०पृ० 136 द० प्र०

की आकृति भी बहुत सी मिलती है। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्यों को दृष्टान्त से उपदेश किया है कि जैसे बन्दर मांस कभी नहीं खाते और फलादि खाकर निर्वाह करते है वैसे तुम भी किया करो। जैसा बन्दरों का दृष्टान्त सांगोपांग मनुष्यों के साथ घटना है वैसा अन्य किसी का नहीं इसलिए मुनष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड़ देवें।

हिंसक:- ये जितने उत्तर किए ये सब व्यवहार सम्बन्धी है। परन्तु पशुओं को मार के खाने में अधर्म तो नहीं होता? और जो होता होगा तो तुम को होना होगा। क्योंकि है। इस विषय में जिज्ञासु भाइयों को उस संवाद का आद्योपान्त मनन करना चाहिए।

इसी विषय में इसी पृष्ठ पर आगे लिखा है। गो० नि० पृ० 926 द० प्र०

हिंसक:- जिन पशुओं और पक्षियों अर्थात् जंगल में रहने वालों से उपकार किसी का नहीं होता और हानि होती है उनका मांस खाना वा नहीं?

रक्षक:- न खाना चाहिए, क्योंकि वे भी उपकार में आ सकते है। देखो 100 भंगी जितनी शुद्धि करते है उन से अधिक एक सूअर व मुर्गा, अथवा मोर आदि पक्षी सर्प आदि की निवृत्ति करने से सृष्टि में अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है। तब आलस्य पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इस से देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट-व्यसन बढ़ जाते है। जैसे कि मद्य-मांससेवन, बाल्यावस्था में विवाह:- (स० प्र० पृ० 402 द० प्र०)

जो ये सात दुर्गुण दोनों कामज और क्रोधज दोषों में गिने हैं इन में से पूर्व 2

विशेष सम्पादकीय : "भारतवर्ष पर्वों का देश है इसमें विभिन्न-पर्व सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर मनाएं जाते है। परन्तु भारतीय पर्वों को भी कालान्तर में रूढ़िवाद से ओतप्रोत बना दिया गया। और उनका वैज्ञानिक स्वरूप जनमानस से विलुप्त प्रायः हो गया है। आज भी भारत के कुछ भागों में बलि तथा मांस भक्षण की प्रथाएँ प्रचलित है जो मानव के आदर्शों पर कुठाराघात है। वेद तथा शास्त्रों में किसी भी स्थान पर मानव तथा पशु बलि अथवा मांस भक्षण का लेशमात्र भी संकेत नहीं है। लेकिन धर्म की रुढ़ि परम्पराओं एवं खोखली बुनियादों में आज भी कहीं ना कहीं बलि और मांसभक्षण जैसी अमानुषी परम्परा दृष्टिपात हो रही है।

इन झूठी एवं अवैदिक परम्पराओं का महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूर्णरुप से खण्डन किया और उसके स्थान पर एक विशुद्ध, पवित्र और वैदिक परम्परा का शुभारम्भ किया। उन्हीं के आदर्शो एवं मान्यताओं के आधार पर आइए दशहरे के पर्व पर नर-पशुबलि तथा मांस भक्षण निषेध पर महर्षि के चिन्तन को अपना आदर्श बनाएँ और अपने जीवन को ही नहीं विस्तृत धरा को आर्य बनाएँ, श्रेष्ठ परम्परा अपनाएँ। तभी तो पर्वो के द्वारा भारतवर्ष विश्व पटल पर शोभायमान होगा, तो आइए सच्चे पर्वो से भारत को सजाएं। सांस्कृतिक परम्पराओं को उनकी वास्तविकताओं से संयुक्त करें, यही वास्तविक बलिदान होगा।"

(2) गृहस्थियों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेध:-

मृगया अर्थात् शिकार खेलना, द्यूत और प्रसन्नता के लिए भी चौपड़ आदि खेलना, दिन में सोना, हँसी ठठ्ठा मिथ्यावाद करना, स्त्रियों के साथ सदा अधिक निवास में मोहित होना, मद्यपानादि नशाओं का करना, गाना, बजाना, नाचना वा इन का देखना और वृथा इधर उधर घूमते फिरना ये दश दुर्गुण काम से होते हैं। ये अठारह दुर्गुण हैं इनकों राजा अवश्य छोड़ देवे। सं०वि०पृ० 176 द० प्र

नोट - यहां मद्यपानादि में मांसभक्षण भी आ जाता है।

(3) अन्यवर्गों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेध:-

नोट - यहां पर संन्यासी का कर्त्तव्य बताते हुए स्वामी जी लिखते है:-

अपने आत्मा और परमात्मा में स्थिर, अपेक्षारहित, मद्य- मांसादिवर्जित होकर, आत्मा ही के सहाय से सुखार्थी होकर, इस संसार में धर्म और विद्या के बढ़ाने में उपदेश के लिए सदा विचरता रहे। म०प्र०पृ० 230 द० प्र०

(4) मांस-भक्षण का सबके लिए निषेध:-

हिंसक: देखो ईश्वर ने पुरुषों के दाँत कैसे पैने, मांसाहारी पशुओं के समान बनाए हैं, इस से हम जानते है कि मनुष्यों को मांस खाना उचित है।

रक्षक:- जिन व्याघ्रादि पशुओं के दाँत के दृष्टान्त से अपना पक्ष सिद्ध किया चाहते हो क्या तुम भी इसके तुल्य ही हो? देखो, तुम्हारी मनुष्यजाति उनकी पशु-जाति, तुम्हारे दो पग और उनके चार, तुम विद्या पढ़कर सत्यासत्य का विवेक कर सकते हो वे नहीं। और वह तुम्हारा दृष्टान्त भी युक्त नहीं क्योंकि जो दांत का दृष्टान्त लेते हो तो बन्दर के दांतो का दृष्टान्त क्यों नहीं लेते? देखो बन्दरों के दांत सिंह और बिल्ली आदि के समान है और वे मांस नहीं खाते। मनुष्य और बन्दर तुम्हारे मत में निषेध है। इसलिए तुम मत खाओ और हम खायें। क्योंकि हमारे मत में मांस को खाना अधर्म नहीं।

रक्षक:- हम तुमसे पूछते है कि धर्म और अधर्म व्यवहार ही में होते हैं व अन्यत्र? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्माधर्म होते है। जिस-जिस व्यवहार से दूसरों को हानि वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार में उपकार हो वह धर्म कहाता है। तो लाखों के सुख लाभकारक पशुओं का नाश करना अधर्म और उनकी रक्षा से लाखों को सुख पहुँचाना धर्म क्यों नहीं मानते? देखो चोरी जारी आदि कर्म इसलिए अधर्म है कि इनसे दूसरे की हानि होती है। नहीं तो जो जो प्रयोजन धनादि से उनके स्वामी सिद्ध करते है वे ही प्रयोजन उन चोगदि भी सिद्ध होते है। इसलिए यह निश्चित है कि जो जो कर्म जगत् में हानिकारक है वे वे अधर्म और जो जो परोपकार है वे वे धर्म कहाते हैं। जब एक आदमी की हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप से गिनते हो तो गवादि पशुओं को मार के बहुतों की हानि करना महापाप क्यों नहीं? देखो मांसाहारी मनुष्यों में दयादि उत्तम गुण होते ही नहीं। किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजनसिद्ध करने ही में सदा रहते हैं। जब मांसाहारी किसी पुष्ट पशु को देखता है तभी उसकी इच्छा होती है कि इसमें मांस अधिक है मार कर खाऊं तो अच्छा है और जब मांस का न खाने वाला उस को देखता है तो प्रसन्न होता है कि यह पशु आनन्द में है। जैसे सिंहादि मांसाहारी पशु किसी का उपकार तो नहीं करते किन्तु अपने स्वार्थ के लिए दूसरे का प्राण भी ले मांस खाकर अति प्रसन्न होते हैं, वैसे ही मांसाहारी मनुष्य भी होते हैं। इसलिए मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं। गो० नि० पृ० 926 द० प्र०

नोट - स्वामी जी महाराज जी ने गोकरुणानिधि में पृ० 926 से लेकर पृ० 930 तक एक हिंसक-रक्षक-संवाद लिखा पवित्रता और अनेक उपकार करते है और जैसे मनुष्यों का खान-पान दूसरे के खाने-पीने से उनका जितना अनुपकार होता है वैसे जंगली मांसाहारी का अन्न जंगली पशु और पक्षी है। और जो विद्या वा विचार से सिंहादि वनस्थ पशु और पक्षियों से उपकार लेवें तो अनेक प्रकार का लाभ उससे भी हो सकता है। इस कारण मांसाहार का सर्वथा निषेध होना है।

स० प्र० पृ० 22० द० प्र० इस विषय में इस प्रकार लिखा है:-

जब अश्वालम्भ अर्थात् घोड़े को मार के अथवा (गवालम्भ) गाए को मार के होम करना ही वेदविहित नहीं हैं। तो उसका कलियुग में निषेध माना जाए तो त्रेता आदि में विधि आ जाए। तो इस में ऐसे दुष्ट काम का श्रेष्ठ युग में होना सर्वथा असम्भव है। और संन्यास की वेदादि शास्त्रों में विधि है उसका निषेध करना निर्मूल है। जब मांस का निषेध है तो सर्वथा ही निषेध है।

(5) मांसभक्षण दुष्ट व्यसन है।

स्वयंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यो का चक्रवर्ती राज्य था। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़ कर नष्ट हो गए क्योंकि परमात्मा की इस अर्थात् व्यर्थ से कठोर वचन से अन्याय, से दण्ड देना, इस से मृगया खेलना, इस से स्त्रियों का अत्यन्त संग, इस से जुआ अर्थात् द्यूत क्रीड़ा और इससे भी मद्यादिसेवन करना बड़ा दुष्ट व्यसन है। स० प्र० पृ० 248 द० प्र०

नोट :- यहां भी मद्यादि में मांसभक्षण आ जाता है।

(6) मांस-भक्षण अन्याय है:- गो० नि० पृ० 927 द०प्र०। जो प्रत्येक दृष्टान्त देखना चाहो तो एक मांसाहारी का एक दूध घी और अन्नाहारी मथुरा के मल्ल चौबे से बाहुयुद्ध हो, तो अनुमान है कि चौबा मांसाहारी को पटक उस की छाती पर चढ़ ही बैठेगा। पुन: परीक्षा होगी कि किस के खाने से बल न्यून और अधिक होता है। भला तनिक विचार करो कि छिलकों के खाने से अधिक बल होता है, अथवा रस जो सार है उसे खाने से? मांस छिलके के समान और दूध घी साररस तुल्य है। इसको जो युक्तिपूर्वक खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है। फिर माँस का खाना व्यर्थ और हानिकारक अन्याय अधर्म और दुष्ट-कर्म क्यों नहीं (अर्थात् दुष्ट कर्म है)।

- शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. : 011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

योग के साधकों को आश्वासन

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

महर्षि पतञ्जलि ने अपने योग दर्शन में योग के आठ अंग बताये हैं- (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि। इनमें प्रथम के चार यम, नियम, आसन और प्राणायाम बहिरंग योग कहाते हैं। अन्त के चार प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अन्तरंग योग हैं। यम पाँच प्रकार के होते हैं-

"तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।।" यह योगदर्शन का वचन है।

अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन, कर्म, वचन से चोरी त्याग, (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम, (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता, स्वत्वाभिमानरहित होना, इन पाँच यमों का सेवन सदा करें।

नियम-

"शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः।।" यह योगशास्त्र का वचन है।

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं, किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि-लाभ में हर्ष व शोक न करना, (तपः) अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान, (स्वाध्याय) पढ़ना-पढ़ाना, (ईश्वर प्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पाँच नियम कहाते हैं।

यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करे। जो यमों का सेवन छोड़ के, केवल नियमों का सेवन करता है, वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता, किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।

इस तथ्य के समर्थन में निम्नलिखित मनुस्मृति का श्लोक देखने योग्य है-

"यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।" यमान्पतत्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन्।।

मनु० 4/204

यम और नियम जीवन जीने के महत्त्वपूर्ण अंग हैं, इनके अभाव में योग की साधना असम्भव है। यहाँ एक और सच्चाई ध्यान में रखनी चाहिए कि सदाचारी गृहस्थ भी योग की साधना आराम से कर सकता है।

योग का तीसरा अंग है आसन। योगदर्शन का सूत्र है-

"स्थिरसुखमासनम्" योगसाधना के लिए लम्बे समय तक स्थिर होकर सुखपूर्वक बैठना। योगसाधना के लिये मुख्य रूप से सिद्धासन, पद्मासन व, सुखासन बताये जाते हैं। आसन के सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि दोनों पुट्ठे समान रूप से आसन पर स्थित हों, कमर में जहाँ त्रिकास्थि है वहाँ से मेरूदण्ड गर्दन तक सीधा रहे। इससे इड़ा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों नाड़ियाँ खुली रहें और प्राणों का आवागमन होता रहे। साधना के लिए इतना ही आसन पर्याप्त है।

योग का चतुर्थ अंग है प्राणायाम। प्राणायाम में प्राणों को श्वास से दोनों नथुनों से बाहर निकालकर रोकना वायु और मूल को संकुचित करना लाभकारी है। अधिक देर बाह्यवृत्ति अर्थात् बाहर रोकना उत्तम है। स्वाभाविक रूप से श्वास अन्दर लेकर थोड़ा रोककर फिर बाहर रोकना मूल पायु का संकोच करना लाभकारी है। इससे इड़ा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों खुलकर सक्रिय हो जाती हैं और साधना में सहयोग मिलता है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम, ये चारों बहिरंग हैं। प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये चारों अन्तरंग योग हैं। प्रत्याहार का अर्थ है कि ज्ञान इन्द्रियों को वाह्य विषयों से अन्तर्मुखी करके परमेश्वर में ध्यान लगाना। भगवान ने आँख, कान, नाक आदि ज्ञान इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है, इसीलिये वे बाहर के विषयों को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। उन्हें अन्तर्मुखी करके परमेश्वर के गुण, चिन्तन में लगाना प्रत्याहार हैं, इसीलिये योगसाधना के समय आँखे अधखुली बन्द कर लेते हैं। कई लोग कानों में रूई का फूहा भी लगा लेते हैं। इससे बाहर के दृश्य, शब्द आदि नहीं सुनायी पड़ते। अन्तरंग योग का द्वितीय साधन "धारणा" है। धारणा की परिभाषा है-**"देशबन्धचित्तस्यधारणा।"** चित्त को किसी एक स्थान पर बांध देना। कई लोग दीपक की लौ पर भी धारण करते हैं। किन्तु परमेश्वर की धारण के लिये हृदय पुण्डरीक- दोनों छातियों के बीच में खाली जगह पर, नासिकाग्र दोनों भौहों के बीच में आज्ञा चक्र पर (जहाँ पिट्यूटरी ग्लैण्ड्स) और सिर में सहस्रार चक्र (जहाँ खोपड़ी में पिलपिला है) उत्तम स्थान है।

इसके पश्चात् ध्यान का क्रम आता है। योगदर्शन में कहा है- **"तत्रैयिकतानता ध्यानम्।"** धारणा को एकरस बनाये रखना, कोई विच्छेद न होने देना ध्यान है। ध्यान में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहना उचित है। इसका पूर्ण अभ्यास हो जाने पर समाधि लग जाती है। समाधि में सब कुछ भूल जाता है। ध्यान करने वाला अपने को भूल जाता है, मैं ध्यान कर रहा हूँ यह भी भूल जाता है। केवल परमेश्वर का चिन्तन मात्र ही ध्यान में रह जाता है। समाधि भी सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात दो तरह की होती है। इस समय समाधि के इन दोनों भेदों को अब छोड़ रहे हैं, यह साधना का ऊँचा विषय है। योग साधना में समाधि तक पहुँचना अनेक जन्मों में सिद्ध हो पाता है।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से गीता में पूछा है यदि कोई मनुष्य योग साधना करता-करता भटक जाये तो उसकी क्या गति होती है-

"अयतिः श्रद्धायोपेतो योगाच्चलित मानसः। अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति।।" -गीता० 6/37

अर्जुन बोले-हे श्रीकृष्ण! जो योग में श्रद्धा रखने वाला है: किन्तु संयमी नहीं है, इस कारण जिसका मन अन्तकाल में योग से विचलित हो गया है, ऐसा साधक योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत्साक्षात्कार को न प्राप्त होकर किस गति को प्राप्त होता है?

श्रीकृष्ण जी उत्तर देते हैं कि योग का मार्ग कल्याण का मार्ग है। योग के मार्ग में चलने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। गीता में श्रीकृष्ण के आश्वासन ध्यान देने योग्य हैं-

"पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति।।" गीता० 6/40

श्रीभगवान् बोले-हे पार्थ। उस पुरूष का न तो इस लोक में नाश होता है और न परलोक में हीं। क्योंकि हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

"प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते।।" गीता० 6/41

योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर, उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है।

अथवा वैराग्यवान पुरूष उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता है। परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है, सो संसार में निःसन्देह अत्यन्त दुर्लभ है।

"तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।।" गीता० 6/43

वहाँ उस पहले शरीर में संग्रह किये हुए बुद्धि-संयोग को अर्थात् समबुद्धिरुप योग के संस्कारों को अनायास ही प्राप्त हो जाता है और हे कुरुनन्दन! उसके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्रतिरूप सिद्धि के लिये पहले से भी बढ़कर प्रयत्न करता है।

"पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।।" गीता० 6/44

वह श्रीमानों के घर में जन्म लेनेवाला योगभ्रष्ट पराधीन हुआ भी उस पहले के अभ्यास से ही निःसन्देह भगवान की ओर आकर्षित किया जाता है, तथा समबुद्धिरूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लङ्घन कर जाता है।

"प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्ध किल्बिषः। अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।।" गीता० 6/45

परन्तु प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है।

इस सबका यही आशय है कि मनुष्य को जहाँ तक सुयोग सुविधा मिले, शरीर साथ दे, परमेश्वर के साक्षात्कार के लिये योगसाधना अवश्य करते रहना चाहिये।

- पी-30, कालिन्दी हाऊसिंग स्टेट, कोलकाता-700089
मो० : 9432301602

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

तिरुवनन्तपुरम् पुस्तक मेला

स्थान : पुथारीकंडम मैदान, तिरुवनन्तपुरम् (केरल)

4 से 12 अक्तूबर, 2014 : प्रात : 11 बजे

दक्षिण भारत आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रधानमन्त्री का 'स्वच्छ-भारत'...

1. स्थान-स्थान पर स्वच्छता सम्बन्धी प्रेरक वाक्य लिखवाएँ:- स्वच्छता का यह व्यापक आन्दोलन जन-जन का आन्दोलन है। जिससे जन समुदायों को प्रेरित एवं दिशा निर्देशन हेतु यज्ञशालाओं, भवनों एवं दीवारों पर प्रेरक वाक्य एवं सूक्तियाँ लिखवाकर जन सामान्य को प्रेरित करना चाहिए।

2. अधिकाधिक कूडादानों का प्रयोग:- आर्य महानुभावों को स्वच्छ वातावरण रखने के लिए अच्छे प्रकार के कूडादान जो ढ़के हुए हो भवन के बाहर यज्ञशालाओं के पास तथा द्वारों के आस-पास रखने चाहिए। क्योंकि ऐसे स्थानों पर लोग किसी व्यक्ति को न देखकर कूडा चौराहे पर, रास्ते में व अन्य स्थानों पर फेंक देते है जिससे गन्दगी का वातावरण बन जाता है।

3. स्वच्छता सामग्री की उपलब्धता:- आर्य समाज के स्टोर में स्वच्छता के लिए प्रयोग की जाने वाले सामग्री उपस्थित होनी चाहिए। पानी पीने अथवा हाथ धोने के स्थान पर साबुन, डिटर्जेन्ट केक अथवा लिक्विड में रखा होना चाहिए जिससे व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग कर सके।

4. उत्तरदायित्वों का निर्वाह:- मानव अपने जीवन में स्वच्छता के लिए सदा कर्त्तव्यबद्ध रहे तभी कार्यों को पूर्ण एवं सफल बनाया जा सकता है। व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत एवं घरेलू स्वच्छता के कार्यों में सदा संलग्न रहना चाहिए। अथवा सरकार द्वारा कर्मचारियों को अपने सफाई के उत्तरदायित्वों को ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए। और सरकार भी स्वच्छता नियमों में किसी प्रकार की शिथिलता न वर्त्ते तो इन स्वच्छता सम्बन्धी कार्यों को सफल बनाया जा सकता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य अपनी कार्यशैली को जिम्मेदारी पूर्वक निभाना चाहिए।

जब सरकार द्वारा संलग्न कर्मचारीगण और सामान्य व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों को समझकर निर्वाह करेंगे तो यह एक जन आन्दोलन बन जाएगा और हम सब का स्वच्छ भारत का स्वप्न तभी पूर्ण होगा, सार्थक होगा। स्वच्छ भारत, समृद्ध भारत।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में

बाढ़ पीड़ितों हेतु राहत कार्य जारी : स्थान-स्थान से भेजी जा रही है राहत

आप भी अपनी सहयोग राशि अवश्य भेजें : दानदाताओं के नाम आर्यसन्देश में प्रकाशित किए जाएंगे।

दानी महानुभाव/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. 09481000000276 पंजाब एंड सिंध बैंक IFSC - PSIB 0020948

'आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.'
खाता सं. 10194249813 भारतीय स्टेट बैंक IFSC - SBIN0001291

विशेष : (1) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के खाते में अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 9540040339 परे सूचित करें तथा aryasabha@yahoo.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

(2) **आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.** के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 09419133884 पर सूचित करें तथा bharatveena@gmail.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें, जिससे उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक

आचार्य बलदेव (प्रधान)	प्रकाश आर्य (मन्त्री)	भारत भूषण आर्य (प्रधान)	रविकान्त आर्य (मन्त्री)	योगेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर		संयोजक, राहत शिविर

जम्मू-कश्मीर में बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री का वितरण करते जम्मू सभा के अधिकारीगण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक विचारोत्सव

कल आज और कल

21 नवम्बर, 2014 प्रात: 8:25 से

तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

-: निवेदक :-

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली एवं समस्त विद्यालय

उत्तम करें राष्ट्र निर्माण

विजया-दशमी पर्व मनायें, वीरों की जय कर दिखलायें
जय हो देश महान, उत्तम करें राष्ट्र निर्माण।।...

चलें असत् से सत्य चाल कर, गर्व करें संस्कृति विशाल पर।
मातृभूमि हित जियें जिलायें, आर्य बने पहचान।। उत्तम करें....

चलें तमस से ज्योतिर्पथ पर, हिलें डुलें न किसी विपत्ति पर।
जगमग ज्योतिर्मय हो जायें, पहुँचा घर-घर ज्ञान।। उत्तम करें...

चलें मृत्यु से अमृत पथ पर, श्री राम चढ़े निर्भय इस रथ पर।
असुर विहीन समाज बनायें, उपजा त्याग बलिदान।। उत्तम करें.

विजया-दशमी पर्व हमारा, शस्त्रों का पूजन हो न्यारा।
शस्त्र-शास्त्र के शुचि बंधन से, महके हिंदुस्तान।। उत्तम करें..

- श्रीमती विमलेश बंसल 'आर्या'
329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-65

'सरदार वल्लभ भाई पटेल' की 139वीं जयन्ती

नागरिक परिषद् दिल्ली के द्वारा 'राष्ट्र निर्माता-लौह पुरूष' सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की 139 वी जयन्ती समारोह। 31 अक्टूबर 2014 को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर नागरिक परिषद् दिल्ली, सरदार बल्लभ भाई पटेल स्मारक ट्रस्ट दिल्ली एवं चन्द्रावती चौधरी स्मारक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में 'देशराज चौधरी' परिसर के सभागार में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन 'राष्ट्रीय एकता के स्वर' का आयोजन धूम-धाम से किया जा रहा है।

- नितिज्जय चौधरी
मो. 9810103680

पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द और मांसभक्षण....

(7) मांस-भक्षण अधर्म है।

नोट:- उपरिलिखित गो० नि० के 927 पृ० के उद्धरणों जहां पर स्वामी जी महाराज मांसभक्षण को दुष्ट कर्म ठहराते है वहां ही इसे अधर्म भी लिखते हैं। वाममार्गियों के पंचमकारों वाले श्लोक को उद्धृत करके उनका खण्डन करते हुए स्वामी जी महाराज पुन: इसी विषय में स०प्र०पृष्ठ 410 प्र०मा० में लिखते है।

अर्थात् देखो इन गवर्ग एण्ड पोपों की लीला कि जो वेदविरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वाममार्गियों ने माना। मद्य, मांस, मीन अर्थात् मछली, मुद्रा, पूरी कचौरी और बड़े रोटी आदि चर्वणा, योनि पात्राधार मुद्रा और पांचवा मैथुन अर्थात् पुरुष सब शिव और स्त्री सब पार्वती के समान मान कर **"अहं भैरवस्त्वं भैरवी ह्यावयोरस्तु संगम:"** चाहे कोई पुरुष वा स्त्री हो इस ऊट-पटांग वचन को पढ़ के समागम करने में वे वाममार्गी दोष नहीं मानते।

नोट:- यहां इन पंच मकारी को स्वामी जी महाराज मद्य अधर्म के काम मानते है और इस कारण वाममार्ग का खण्डन कर रहे हैं। इन पंच मकारों में एक मांसभक्षण भी है।

(8) मांस-भक्षण कुलक्षण है- स० प्र० पृ० 388 द० प्र०।

"आर्यावर्त देशवासियों का आर्यावर्त देश से भिन्न 2 देशों में जाने से आचारभ्रष्ट हो जाते है या नहीं"। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए और यह दर्शाते हुए कि हमारे पूर्वज व्यापार और विजय-यात्रादि के लिये-देशांतरी और द्वीप-द्वीपान्तरों में जाया करते थे। स्वामी जी महाराज इस विषय में लिखते हुए, शंका करते है-

"यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो और क्या है" हां इतना कारण तो है कि जो लोग मांस-भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धि से दूषित होते हैं इसलिए उनके संग करने से आर्यों में भी यह कुलक्षण न लग जाय, यह तो ठीक है।

(9) मांसभक्षण महापाप है स०प्र०पृ० 661-662 द० प्र०।

समीक्षक:- अब सुनिये! ईसाइयों में पाप करने से कोई धनाढय भी नहीं डरता होगा और न दरिद्र, क्योंकि इन के ईश्वर ने पापों का प्रायश्चित करना सहज कर रखा है। एक यह बात ईसाईयों की बाईबल में बड़ी अदभुत है कि बिना कष्ट किये पाप से पाप छूट जाए क्योंकि एक तो पाप किया और दूसरे जीवों की हिंसा की और खूब आनन्द से मांस खाया और पाप भी छूट गया।

नोट:- यहां बाईबल में लिखे मांसभक्षण से पापों के प्रायश्चित पर स्वामी जी महाराज शंका करते है "बिना कष्ट किये पाप से पाप छूट" यह पंक्ति विशेष विचारणीय है। यहां स्पष्ट मांसभक्षण को पाप माना गया है। इसी विषय में गो० नि० पृ० 122 द० प्र० माला पर एक गौ कितने मनुष्यों को लाभ पहुँचाती है इसकी गणना करते हुए स्वामी जी महाराज लिखते है-

दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि 410440 मुनष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छ: गाय की पीढ़ी पर पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाये तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इस के मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते है। देखो तुच्छ लाभ के लिये लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं? (अर्थात् महापाप है।)

इसी विषय में आगे लिखा है:- गो० नि० पृ० 924-25 द० प्र०

इसलिये यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि (अघ्न्या: + यजमानस्य पशून पाहि) हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिन से तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसी लिये ब्रह्मा से लेकर आजपर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते है।

(10) मृगया (शिकार खेलना) महादुष्ट व्यसन है-

स० प्र० पृ० 142 द० प्र०

काम के व्यसनों में बड़े दुर्गुण, एक मद्यादि अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन, दूसरा पांसों आदि से जुआ खेलना, तीसरा स्त्रियों का विशेष संग, चौथा मृगया खेलना, ये चार महा दुष्ट व्यसन हैं।

नोट:- सं० 2 तथा 5 देखिये।

"जो उत्तम तमोगुणी हैं वे चारण (जो कि कविता दोहादि बना कर मनुष्यों की प्रशंसा करते है) सुन्दर पक्षी, दाम्भिकपुरुष अर्थात् अपने सुख के लिये अपनी प्रशंसा करने हारे, राक्षस जो हिंसक, पिशाच, अनाचारी अर्थात् मद्यादि के आहारकर्त्ता और मलिन रहते है वह उत्तम तमोगुण के कर्म का फल है।

- शेष अगले अंक में

स्व. रामचन्द्र खट्टर जी जन्मदिवस पर

सामवेद पारायण यज्ञ

रविवार 26 अक्टूबर 2014

यज्ञ : प्रात: 05:30 से 11:00 बजे तक

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य आनन्द प्रकाश आर्य

भजन व प्रवचन: 11 से 1 बजे

मुख्य वक्ता : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

स्थान: सी-30, नीलाम्बर अपार्टमेन्ट, रानीबाग, दिल्ली - 34

निवेदक

माता ईश्वर देवी-समस्त खट्टर परिवार

श्राद्ध के सत्य स्वरूप को स्वीकार करने हेतु लिया व्रत

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में पूर्णिमा सत्संग के अवसर सभी पदाधिकारीगण, सदस्य एवं उपस्थित सभी याज्ञिकों ने माता-पिता की सच्चे मन से सेवा करने का व्रत लिया। आचार्य अग्निमित्र ने श्राद्ध-तर्पण के आदर्श को समझाया। उन्होंने कहा कि माता-पिता के आशीर्वाद से आयु, विद्या, यश तथा कीर्ति की प्राप्ति होती है। - ***राकेश चड्ढा, मन्त्री***

श्री सनातन धर्म मन्दिर सभा, आर्यसमाज कैलाश-1 एवं -2 के सहयोग से

गीता प्रवचन

15 अक्टूबर से 18 अक्टूबर 2014 तक

समय: सायं 6:45 बजे से 8:45 बजे तक

स्थान : विवेकानन्द हॉल, श्री सनातन धर्म मन्दिर, एस. ब्लाक, ग्रेटर कैलाश-2,

प्रवक्ता : आचार्य अखिलेश्वर जी भजन : पं० कचन कुमार

समापन समारोह : 19 अक्तूबर, 2014 : प्रात: 11:00 से 01:00 बजे तक

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- निवेदक -

रजनीश गोयनका (अध्यक्ष)	**इन्द्रसेन साहनी** (प्रधान)	**प्रियव्रत** (प्रधान)
सनातन धर्म सभा	आर्यसमाज ग्रे.कैलाश-1	आर्यसमाज ग्रे. कै. -2

वर चाहिए

सुसंस्कृत उच्चशिक्षित आर्य परिवार की 35 वर्षीय, 5'-4" एम.एस.सी.(एग्री) सुन्दर, सुशील, कन्या हेतु उच्च शिक्षित, उच्च सेवारत, सुसंस्कृत, निर्व्यसनी, शाकाहारी वर की अपेक्षा है। उच्च जाति बंधन नहीं। (माता-पिता का अन्तर्जातीय विवाह माता अग्रवाल गुप्ता, पिता महाराष्ट्रीयन मराठा है)। इच्छुक परिवार सम्पर्क करें-

09421830561, 0724-2490495, Email : m.vidyasthi1@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक सेवा आर्यसमाजें सभा की इस सेवा से लाभ उठाएं

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग की ओर से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक भेजने का कार्य नियमित रूप से होता है। ऐसी समस्त आर्यसमाजें जहां उपदेशक/भजनोपदेशक नियमित रूप से नहीं आते हैं और वे विद्वानों को आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों पर उपदेशक आदि बुलाने के लिए सभा के अन्तर्गत संचालित वेद प्रचार विभाग के **सहायक अधिष्ठाता आचार्य ऋषिदेव आर्य जी से मो. 9540040388** पर सम्पर्क करें। आचार्य जी द्वारा आपकी आर्यसमाज/संस्थान के लिए आगामी छह मास के साप्ताहिक सत्संग निर्धारित किए जा सकेंगे।

- ***महामन्त्री (9958174441)***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैडी 500 ग्राम	160/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
2. च्वयनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	13. शान्ति सुधा 1 लीटर	121/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-	14. ब्रह्मी सुधा 1 लीटर	121/-
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		
9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

आशुलिपिक चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के लिए एक हिन्दी आशुलिपिक की आवश्यकता है। आवेदक को डीटीपी कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी टाइपिंग का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। आर्यसमाज/गुरुकुल की पृष्ठभूमि के आवेदकों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। अपने आवेदन निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें-

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

aryasabha@yahoo.com

आर्य समाज विवेक विहार, दिल्ली में

यज्ञ एवं भव्य वेदकथा

13 से 19 अक्टूबर 2014

यज्ञ : प्रात: 6:30 से 8 बजे
ब्रह्मा : आचार्य श्री ब्रह्मदेव वेदालंकार
श्री विजित शास्त्री जी
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या
समापन समारोह : 19 अक्तूबर, 2014
अध्यक्ष : डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री
मु. अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- पीयूष शर्मा, मन्त्री

आर्य समाज बाँगर मऊ उन्नाव का

43वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेदशतकम् पारायण यज्ञ

12 से 16 नवम्बर- 2014

स्थान : जी. पी. पैलेस गैस्ट हाउस,
सण्डीला रोड बांगरमऊ (उन्नाव)
ब्रह्मा : आचार्य आर्य नरेश
भजन : श्री भीष्म आर्य एवं
श्रीमती संगीता आर्या
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- रामगोपाल आर्य, प्रधान

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में

139वाँ ऋषि बलिदान समारोह

31 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2014

ऋग्वेद पारायण यज्ञ
ब्रह्मा : डॉ. वागीश (मुम्बई)
चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता
वेदगोष्ठी एवं सम्मान समारोह
तथा योग साधना शिविर
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- गजानन्द आर्य, प्रधान

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नगर आर्य समाज मौहल्ला महाराम डूंगर-शाहदरा दिल्ली का 60वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक 27/9/2014 की रात्रि तथा 28/9/2014 को धूमधाम पूर्वक मनाया गया। **- रणवीर सिंह आर्य, प्रधान**

आर्यसमाज वसुन्धरा, गाजियाबाद
के तत्त्वावधान में

आध्यात्मिक दिव्य सत्संग

समापन समारोह : 12 अक्तूबर
स्थान : अटल चौक, से.13, वसुन्धरा
ब्रह्मा एवं प्रवचन - ब्र. राजसिंह आर्य

- वेद प्रकाश आर्य, संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियाँ

पश्चिमी दिल्ली -2 : आर्यसमाज पंखा रोड, 'सी' ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली
12 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान, मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
26 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी, मो. 9810014097

आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। कृपया गोष्ठी के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, मो. 9958174441

सेंट्रल जेल आगरा में उपदेश

आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी होशंगाबाद के साथ आर्यसमाज का एक 12 जनों का शिष्ट मंडल 6 सितम्बर को आगरा केंद्रीय कारागार गृह पहुंचा। जिसमे 3000 कैदी वर्तमान में रहते है। आचार्य जी ने कर्मफल के बारे में बताया।आत्म नियंत्रण, सत्संगी विद्वानों का संसर्ग, स्वाध्याय, ईश्वर उपासना व आत्म निरीक्षण इन सभी का एक साथ अभाव व्यक्ति को पापाचार की ओर ले जाता है। आप महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, राम प्रसाद बिस्मिल का आदर्श उपस्थित कर सकते हैं। इन महानुभावों ने जेल में रहकर राष्ट्र, धर्म, संस्कृति के उत्थान हेतु चिंतन मनन लेखन किया। भारती विद्या मंदिर स्कूल आगरा में छात्रों के बीच में भी आचार्य प्रवर ने राष्ट्र व परिवारों के निर्माण हेतु वैदिक धर्म के प्रचार को घर-घर पहुँचाने हेतु विशेष बल दिया तथा मांसाहार से बचने व बच्चों को दूर रखने का सुझाव दिया। इस कार्यक्रम में अर्जुन दवे स्नातक, श्री अरुण डंक, श्री रमाकांत सारस्वत, श्री सुधाकर गुप्ता जी, श्री राजीव खुराना, श्रीमती सन्तोष सडाना, आर्या श्रीमती प्रेमा वर्मा माता जी पार्षद आदि का विशेष सहयोग रहा।

-अश्विनी दुबे, संयोजक

प्रधानमंत्री के 'स्वच्छता-अभियान' में सहयोगी संस्थाएँ

प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान के आवाहन पर जहाँ देशवासी बाहरी सफाई करने में जुटे हैं वहीं **आर्य वीर दल बस्ती मण्डल** ने बाहरी सफाई के साथ-साथ व्यायाम द्वारा आंतरिक एवं यज्ञ द्वारा पर्यावरणीय स्वच्छता का संकल्प लेकर सफाई अभियान को एक नया आयाम दिया है। इस अवसर पर आज आर्य वीर दल बस्ती के पदाधिकारियों एवं आर्य वीरों ने आर्य समाज गॉधी नगर परिसर की सफाई कर प्रधानमंत्री के स्वच्छता संकल्प यज्ञ में अपनी आहुति डाली। आचार्य देवव्रत आर्य ने कहा- आर्य वीर दल आर्य समाज की युवा शाखा है। संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। जिला अधिष्ठाता घनश्याम आर्य ने बच्चों को समझाते हुए मांस-मछली, अण्डा, पान, गुटका, आदि का सेवन न करने का संकल्प दिलाया। इस अभियान में सर्वेश सक्सेना, मुरलीधर भारती, ओम प्रकाश श्रीवास्तव, शिवांग पाण्डेय, आर्यन मिश्र, राहुल आर्य, बिन्देश यादव, संदीप विश्वकर्मा, बिट्टू वर्मा, सृजन सक्सेना, आस्तित्व, आदि आर्यवीर एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। तथा **आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर,** द्वारा संचालित समस्त संस्थाओं में सफाई अभियान प्रारंभ किया गया। समिति प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में उपप्रधान अशोक आर्य, मंत्री प्रदीप कुमार आर्य, संयुक्त मंत्री सुरेश दरगन, कोषाध्यक्ष प्रद्युम्न गर्ग, निदेशक कमला शर्मा, कै. रघुनाथ सिंह, वेद प्रकाश शर्मा, धर्मवीर आर्य, शशिबाला भार्गव व समस्त संस्था प्रधान, समस्त कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में स्वच्छता को जीवन के लिए अनिवार्य मानकर सदैव सर्वत्र सफाई का ध्यान रखने हेतु शपथ ली।

आर्य कन्या उ. विद्यालय आसनसोल को मिला सर्वश्रेष्ठ स्कूल अवार्ड

आर्य समाज द्वारा संचालित आसनसोल स्थित आर्य कन्या हाईस्कूल को राज्य सरकार ने वर्द्धमान जिला का सर्वश्रेष्ठ हाईस्कूल घोषित किया है। शुक्रवार की शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर कोलकाता में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के हाथों स्कूल की प्रिंसीपल उमा पांडेय और हैड क्लर्क हरिदास मुखर्जी ने अवार्ड ग्रहण किया। शनिवार को आर्य समाज के सचिव जगदीश केड़िया ने स्कूल परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में उक्त जानकारी दी। इस अवसर पर प्रिंसीपल उमा पांडेय, शिक्षक प्रभारी उर्मिला ठाकुर, डीएवी स्कूल के शिक्षक प्रभारी उपेंद्र कुमार सिंह भी उपस्थित थे।

जगदीश केड़िया ने बताया कि मुख्यमन्त्री के हाथों सर्टिफिकेट, मोमेन्टो और 25 हजार रूपये का चैक प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि स्कूल की आधारभूत संरचना, प्रबंधन, अनुशासन और पठन-पाठन के आधार पर उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया। वहीं आर्य कन्या उच्च विद्यालय को जिला का सर्वश्रेष्ठ हाईस्कूल घोषित होने से स्कूल के सभी शिक्षक व कर्मी तथा छात्राओं में हर्ष व्याप्त हैं। ।

सार्वजनिक सूचना

समस्त आर्यजनों एवं पाठकों की सेवा में निवेदन है कि यदि कोई सज्जन श्री वेदभरत चौधरी पूर्व संपादक आर्य गजट को या उनके पुत्र-पुत्रियों या अन्य किसी पारिवारिक जनों को जानता हो तो निम्नलिखित नम्बर पर जानकारी दें। मैं आपका अति अभारी होऊंगा।

सुरिन्द्र पाल सुपुत्र स्व. श्री बेलीराम
मकान नं.-12 बी., न्यू गौतम नगर,
ऊना रोड, होशियारपुर (पंजाब)
मो.- 09915862414

शोक समाचार

श्री विजय सिंह गायकवाड का निधन

आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर मध्य प्रदेश के जाने माने वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ता एवं कोषाध्यक्ष श्री विजय सिंह गायकवाड़ जी का दिनांक- 21/09/2014 को 73 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। श्री गायकवाड़ जी आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के उपमंत्री रह चुके थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान डॉ. ब्रह्मुनि, एवं क्षेत्रीय आर्य समाजों पदाधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्तियों ने पहुंचकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री जयसिंह राव गायकवाड़ सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य भी हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धाञ्जली सभा 24 सितम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें जबलपुर के गणमान्य नागरिकों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करते हुए श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

गुरुकुल यमुनातट मंझावली फरीदाबाद हरियाणा में

सवा करोड़ गायत्री, चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर

दिनांक: 04 अक्टूबर 2014 से 8 मार्च 2015 तक
कार्यक्रम अध्यक्ष व दिशा निर्देशक : श्री स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
संयोजक : आचार्य ब्र० राजसिंह आर्य (दि०आ०प्र०सभा)
अधिकाधिक आर्यजन पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें। ***- आचार्य***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 अक्तूबर से रविवार 12 अक्तूबर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9/10 अक्तूबर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 8 अक्तूबर, 2014

प्रतिष्ठा में,

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्व के इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार की गई है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अतः इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
फोन – 011-23360150, 9540040339

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रमाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह